



**HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1**  
**HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1**  
**HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1**

Tuesday 13 May 2014 (morning)  
Mardi 13 mai 2014 (matin)  
Martes 13 de mayo de 2014 (mañana)

1 h 30 m

---

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क:



## ब्लॉग- आओ संकल्प साधने पर कुछ बात करें

कहा तो यही जाता है कि इंसान अगर संकल्प साध ले तो कुछ भी कर सकता है। पर दिक्कत यह है कि संकल्प साधना इतना आसान नहीं।

जो संकल्प नहीं साध पाते अब उनके लिए एक अच्छी खबर है कि वे टीका लगवाएं और साल भर के लिए नशे से मुक्त हो जाएं।

5 लेकिन इस टीके को क्या माना जाए? विज्ञान की उपलब्धि या संकल्प का विकल्प? वैसे यह मामला सिर्फ सिगरेट या तंबाकू की लत का नहीं है। स्थूलकाय हो गए लोगों का संकल्प भी जब चुक जाता है तो वे ऐसी दवाएं तलाशते दिखाई देते हैं जो बिना कसरत और खान पान की आदतें बदले ही उन्हें हल्का बना दें। हो सकता है कि कल को ऐसी दवा बन भी जाए। ऐसा हुआ तो विज्ञान एक बार फिर जीत जाएगा, पर संकल्प एक बार फिर हार जाएगा।

10 वैसे अभी हम यह नहीं जानते कि संकल्प की हार का नतीजा आखिर में बुरा ही होगा या उसमें भी अच्छाई के कुछ रास्ते निकलेंगे।

### प्रतिक्रिया 1:

कोई ताज्जुब नहीं कि आने वाली पीढ़ियाँ यह पूछ बैठें, संकल्प... यह क्या होता है?

### प्रतिक्रिया 2:

15 सही लिखा आपने, संकल्प के टूट जाने पर आदमी दवाओं की शरण में जाता है। लेकिन विज्ञान ने देखिये कितनी तरक्की की है, हर बीमारी का टीका बना दिया, जितना मर्जी खाओ-पियो टीका लगवाओ और खुश रहो। कहते हैं न कि आविष्कार तभी होता है जब आलस्य घर कर जाता है। हमारे साथ भी ऐसा ही कुछ है, दौड़-भाग की दुनिया में अब बस टीकों का ही सहारा नज़र आता जान पड़ता है।

### प्रतिक्रिया 3:

आपने बहुत अच्छा कहा सर, विज्ञान की जीत और संकल्प की हार।

### प्रतिक्रिया 4:

मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया, हर फ़िक्र को धुंए में उड़ाता चला गया। जो मिल गया उसी को मुक़द्दर समझ लिया, बरबादियों का जश्न मनाता चला गया।

### प्रतिक्रिया 5:

20 आपकी यह टिप्पणी बहुत अच्छी है पर विज्ञान की जीत भी तो हमारे संकल्प की ही जीत है और संकल्प की जीत भी वैज्ञानिक मानसिकता की जीत है। आज ज़रूरत इस संघर्ष को बढ़ाने की नहीं घटाने की है।

### प्रतिक्रिया 6:

एक बेबाक राय है कि इंसान चाहे तो क्या नहीं कर सकता लेकिन उसको खुद ही नहीं पता चल पाता कि हो क्या रहा है। संकल्प के साथ-साथ हम लोगों ने साहस को भी किनारे पर रख दिया है, वरना इंसान तो शरीर छोड़ जाता है, आप और हम आदत की बात करते हैं।

ब्लॉगर- हरजिन्दर, <http://www.blogs.livehindustan.com> (2009)

पाठांश ख:

## इंटरनेट पर नियंत्रणों का विशुद्ध भारतीय अंदाज़

भारत सरकार ने अपने सूचना प्रौद्योगिकी कानून के तहत कुछ कड़े नियम जारी कर हलचल मचा दी है। इन नियमों में इस्तेमाल की गई शब्दावली कुछ ऐसी है कि ज़रूरत पड़ने पर कोई भी सरकार ऑनलाइन माध्यमों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए उनकी अलग-अलग ढंग से व्याख्या कर



5 सकती है। जिस सामग्री पर सरकार को आपत्ति है, वह ईशनिंदात्मक, घृणास्पद, संकीर्णतापूर्ण, परेशान करने वाली और अन्य देशों के लिए अपमानजनक सामग्री हो सकती है। साथ ही ऐसी सामग्री जो राष्ट्रीय एकता और अखंडता को नुकसान पहुंचाए, मित्र देशों से हमारे संबंधों को प्रभावित करे या फिर कानून-व्यवस्था को हानि पहुंचाने की आशंका पैदा करती हो। साइबर कानून विशेषज्ञों को लगता है कि सरकार द्वारा तय

10 किए गए मानदंड इतने व्यापक और शब्दावली इतनी ढीली-ढाली है कि उसके दायरे में तो ज़्यादातर ऑनलाइन सामग्री आ जाएगी। ऐसे प्रावधानों को पूरी तरह स्पष्ट बनाए बिना लागू करना उनके दुरुपयोग का पिटारा खोल सकता है। इंटरनेट कंपनियों और इंटरनेट उपभोक्ता इनसे खासे विचलित हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा, शांति और सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखना एक बुनियादी ज़िम्मेदारी है। इसके

15 मामले में इंटरनेट भी कोई अपवाद नहीं हो सकता। लेकिन क्या ऐसे मामलों के लिए हमारे पारंपरिक कानून पर्याप्त नहीं हैं? सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित अपराधों से निपटने के लिए सन् 2000 में हम पहले ही अपना आई.टी. कानून ला चुके हैं और उसके बाद सन् 2008 में उसमें संशोधन किए जा चुके हैं। उसके बाद भी इन कानूनों की सीमाएं बरकरार हैं, लेकिन इस मायने में नहीं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार पर ही अंकुश लगा दिया जाए। अगर

20 भ्रष्टाचार के विरुद्ध चल रही मौजूदा मुहिम के समर्थन में किसी वेबसाइट पर कोई आक्रामक लेख लिखा जाता है तो वह इनमें से अनेक श्रेणियों के तहत दंड का पात्र हो जाएगा। इंटरनेट एक मुक्त माध्यम है, जिसे कानूनों और नियमों में संयमित करने से पहले उसकी बुनियादी प्रकृति को समझने की ज़रूरत है। इसे तब तक नहीं छोड़ा जाना चाहिए जब तक कि वह हमारे राष्ट्रीय हितों को नुकसान न पहुंचा रहा हो या सीधे-सीधे किसी की मानहानि न कर रहा हो (जिसके लिए भारतीय

25 दंड संहिता में पर्याप्त प्रावधान हैं)। सूचनाओं के स्वतंत्र प्रवाह में आस्था रखने वाले दुनिया भर के नागरिक इससे चिंतित हैं लेकिन इस चिंता में भारत जैसी लोकतांत्रिक शक्ति का क्या योगदान होगा, यह एक प्रश्नचिन्ह है।

बालेन्दु शर्मा दाधीच, <http://www.srijangatha.com> (2013)

पाठांश ग:



## क्या बड़े जलाशय भूकंप का कारण होते हैं

यह कोई कोरी कल्पना नहीं है बल्कि इस बारे में तमाम वैज्ञानिक तथ्य भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि बड़े जलाशय भूकंप का कारण बनते हैं। नवंबर 2009 में महाराष्ट्र स्थित कोयना बाँध के आस पास एवं मुम्बई के कुछ इलाकों में भूकंप का अनुभव किया गया। भूकम्प की गति 4.8 मापी गई थी। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह भूकंप बाँध की वजह से आया था।

- 5 कोयना बाँध सन् 1962 में बनकर तैयार हुआ था। उसकी ही वजह से सन् 1967 में महाराष्ट्र में एक ज़बरदस्त भूकंप भी आ चुका है, जो कि यहाँ का अब तक का सबसे ज्यादा तीव्रता वाला भूकंप था। तब भूकंप की तीव्रता 6.3 मापी गई थी, और भूकंप का असर उसके केन्द्र से 230 कि.मी. दूर तक अनुभव किया गया था। इस भूकंप में 180 लोग मारे गए थे और हज़ारों लोग बेघर हुए थे। उस समय बाँध को भी काफी नुकसान हुआ था, जिसकी वजह से मुम्बई स्थित उद्योगों उद्योगों की आपूर्ति रुक गई थी क्योंकि पावरहाउस ने काम करना बंद कर दिया था। भूकंप तब आया जब बाँध की दीवार के पीछे पानी भर गया। 10 दिसंबर 1967 को आए उस भूकंप में बाँध के निकट गाँव था और यह भी पूरी तरह नष्ट हो गया था। विशेषज्ञों के अनुसार बाँध में पानी भरने के बाद उसके अत्यधिक दबाव के कारण जलाशय के नीचे की सतह स्थानांतरित हुई और जिसकी वजह से भूकंप आया। कोयना बाँध बनने के बाद कोयनानगर के इलाके में सन् 2005 तक 5 या उससे
- 10 15 ज्यादा के तीव्रता वाले कुल 19 भूकंप आ चुके हैं। जबकि बाँध बनने से पहले इस इलाके को भूकंप से सुरक्षित माना जाता था।

- भारत में अस्सी के दशक में आए 9 भूकंपों में से 5 को बाँधों की वजह से आया माना जाता है। अध्ययनों में यह बात साबित हुई है कि बड़े जलाशयों के 25 कि.मी. के आस-पास भूकंप आने की संभावना ज्यादा होती है। जैसे ही किसी बाँध में पानी भरने की प्रक्रिया शुरू होती है वैसे ही पानी के दबाव के समायोजन के लिए जलाशय के सतह में हलचल होती है। कई बार यह हलचल काफी तेज़ भी हो सकती है। जैसे-जैसे जलाशय में पानी का दबाव बढ़ता है, भूगर्भीय हलचल की संभावना बढ़ने लगती है। यह बात तो स्पष्ट है कि भूकंप प्राकृतिक कारणों से आते हैं, जबकि बाँधों की वजह से उनकी तीव्रता बढ़ती है। भारत में बाँध प्रयोक्ता सिर्फ इतना ही आश्वासन दे पाते हैं कि बाँध का निर्माण भूकंप रोधी तकनीक से किया गया है। लेकिन तमाम वैज्ञानिक तथ्यों के बाद
- 20 25 अब यह तो मानना ही होगा कि जलाशय आधारित भूकंप एक सच्चाई है और इसे नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

विपिन चंद्र चतुर्वेदी, <http://www.abhivyakti-hindi.org> (2010)

पाठांश घ:

## तुलसी पौधे का महत्त्व

[ - X - ]

तुलसी भारतीय घरों में सबसे अधिक पाया जानेवाला पौधा है। यह झाड़ी के रूप में उगता है और 1 से 3 फुट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बैंगनी आभा वाली हल्के रोएँ से ढकी होती हैं। पत्तियाँ 1 से 2 इंच लम्बी सुगंधित और अंडाकार या आयताकार होती हैं। पुष्प मंजरी अति कोमल एवं 8 इंच लम्बी और बहरंगी छटाओं वाली होती है, बीज चपटे पीले रंग के छोटे काले चिहनों से युक्त अंडाकार होते हैं। नए पौधे मुख्य रूप से 5 वर्षा ऋतु में उगते हैं और शीतकाल में फूलते हैं।

[ - 1 - ]

तुलसी की मुख्य रूप से सात प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें ऑसीमम सैक्टम को प्रधान या पवित्र तुलसी माना गया जाता है, इसकी भी दो प्रधान प्रजातियाँ हैं- श्री तुलसी जिसकी पत्तियाँ हरी होती हैं तथा कृष्णा तुलसी जिसकी पत्तियाँ नीलाभ- कुछ बैंगनी रंग लिए होती हैं। श्री तुलसी के पत्र तथा शाखाएँ श्वेताभ होते हैं जबकि कृष्ण तुलसी के पत्रादि कृष्णाभ होते हैं। अधिकांश विद्वानों का मत है कि दोनों तुलसी गुणों में समान हैं।



[ - 2 - ]

तुलसी में अनेकों जैव सक्रिय रसायन पाए गए हैं जिनसे इसकी रासायनिक संरचना होती है। प्रमुख सक्रिय तत्व हैं एक प्रकार का पीला उड़नशील तेल जिसकी मात्रा संगठन, स्थान व समय के अनुसार बदलती रहती है। श्री तुलसी में श्यामा की अपेक्षा कुछ अधिक तेल होता है तथा इस तेल का सापेक्षिक घनत्व भी कुछ अधिक होता है। तेल के अतिरिक्त पत्रों में लगभग 83 मिलीग्राम प्रतिशत विटामिन सी एवं 2.5 मिलीग्राम प्रतिशत कैरीटीन होता है।

[ - 3 - ]

प्राचीन ग्रंथों में इस पौधे के लाभों का विशेष उल्लेख मिलता है। भारतीय चिकित्सा विधान में सबसे प्राचीन और मान्य ग्रन्थ "चरक संहिता" में तुलसी के गुणों का वर्णन व भारतीय धर्म ग्रन्थों में तुलसी के रोग निवारक क्षमता की भूरी-भूरी प्रशंसा की गयी है। 'राजवल्लभ ग्रन्थ' में कहा गया है कि तुलसी विभिन्न रोगों के उपचारों में लाभकारी है।

[ - 4 - ]

कैंसर एवं एड्स के उपचार में कारगर भारतीय जड़ी-बूटियों पर विशेष रूप से तुलसी में एड्स निवारक तत्वों की खोज जारी है। मानस रोगों के संदर्भ में भी इन पर परीक्षण चल रहे हैं। अब तुलसी के पत्तों से तैयार किए गए पेस्ट का इस्तेमाल कैंसर से पीड़ित रोगियों में रेडिएशन के प्रभाव को कम करने के इलाज में किया जाएगा।

[ - 5 - ]

पेट-दर्द, और उदर रोग से पीड़ित होने पर तुलसी के पत्तों का रस और अदरक का रस बराबर मात्रा में मिलाकर गर्म करके सेवन करने से कष्ट दूर हो जाता है। सिरदर्द में तुलसी के सूखे पत्तों का चूर्ण कपड़े में बाँधकर सूँघने से फायदा होता है। केवल तुलसी पत्र को पीस कर लेप करने से सिरदर्द और चर्म रोग व मुँहासों में लाभ होता है। सर्दी और खाँसी और दमे में भी तुलसी पत्र का रस उपयोगी पाया गया है। तुलसी में अन्यान्य गुणों के साथ-साथ थकान दूर करने वाले गुण भी पाए जाते हैं।

[ - 6 - ]

माना जाता है कि तुलसी के संपर्क से वायु शुद्ध रहती है। तुलसी से वायु सुगंधित रहती है। तुलसी को अकाल मृत्यु से बचानेवाला और सभी रोगों को नष्ट करनेवाला कहा गया है। इसके स्वास्थ्य संबंधी गुणों के कारण लोग श्रद्धापूर्वक तुलसी की अर्चना करते हैं। तुलसी को संस्कृत भाषा में ग्राम्या व सुलभा कहा गया है। इसका कारण यह है कि यह सभी गाँवों में सुगमतापूर्वक उगाई जा सकती है और सर्वत्र सुलभ है। प्रदूषण का शमन कर तुलसी वातावरण में स्वच्छता एवं शुद्धता लाती है। तुलसी घर परिवार में आरोग्यता की जड़ें मज़बूत करती है।

डॉ.अनुराग विजयवर्गीय, <http://www.abhivyakti-hindi.org> (2010)

पाठांश ड:

## शिक्षा की परिभाषा

एक पाठशाला का वार्षिकोत्सव था। मैं भी वहाँ बुलाया गया था। वहाँ के प्रधान अध्यापक का एकमात्र पुत्र, जिसकी अवस्था आठ वर्ष की थी, बड़े लाड़ से नुमाइश में मिस्टर हादी के कोल्हू की तरह दिखाया जा रहा था। उसका मुँह पीला था, आँखें सफेद थीं, दृष्टि भूमि से उठती नहीं थी। प्रश्न पूछे जा रहे थे। उनका वह उत्तर दे रहा था।



धर्म के दस लक्षण सुना गया, नौ रसों के उदाहरण दे गया। पानी के चार डिग्री के नीचे शीतलता में फैल जाने के कारण और उससे मछलियों की प्राण-रक्षा को समझा गया, चंद्रग्रहण का वैज्ञानिक समाधान दे गया, अभाव को पदार्थ मानने, न मानने का शास्त्रार्थ कर गया और इंग्लैंड के राजा आठवें हेनरी की स्त्रियों के नाम और पेशवाओं का कुर्सीनामा सुना गया। यह पूछा गया कि तू क्या करेगा? बालक ने सीखा-सिखाया उत्तर दिया कि, "मैं जीवनभर लोकसेवा करूँगा।" सभा "वाह वाह" करती सुन रही थी, पिता का हृदय उल्लास से भर रहा था। एक वृद्ध महाशय ने उसके सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया और कहा कि, "जो तू ईनाम माँगे, वही दें।" बालक कुछ सोचने लगा। पिता और अध्यापक इस चिंता में लगे कि देखें, यह पढ़ाई का पुतला कौन-सी पुस्तक माँगता है।

बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था, हृदय में कृत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक आँखों में दिख रही थी। कुछ खाँसकर, गला साफ कर नकली परदे के हट जाने से स्वयं विस्मित होकर बालक ने धीरे से कहा, "लड्डू।" पिता और अध्यापक निराश हो गए। इतने समय तक मेरा वास घुट रहा था। अब मैंने सुख की सांस भरी। उन सबने बालक की प्रवृत्तियों का गला घोटने में कुछ उठा नहीं रखा था, पर बालक बच गया। उसके बचने की आशा है, क्योंकि वह "लड्डू" की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मरे काठ की आलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट नहीं।



श्रीचंद्रधर शर्मा गुलेरी, <http://www.laghukatha.com>